समाजशास्त्रीय विश्लेषण में 'संस्कृति' की अवधारणा की भूमिका —

मानव जाति के सम्बंध में एक विस्तृत परिप्रेक्ष्य प्रदान करने के माध्यम से हमारे बौद्धिक क्षितिज को विस्तार देने के मामले में संस्कृति की अवधारणा अत्यंत उपयोगी है। हमें हमारे पूर्वाग्रहों व समूह केन्द्रीयता से मुक्ति प्रदान करने में इसकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है —

(i) 'लैंगिक भूमिकाओं' की 'सामाजिक निर्मिति' को स्पष्ट करने में सहायक -

सामान्यतः यह समझा जाता है कि, समाज में स्त्रियों व पुरुषों की भूमिकाओं व व्यवहार-प्रतिमानों के मध्य विद्यमान भिन्नता का

कारण 'प्राकृतिक' है। अर्थात् 'प्रकृति' ने महिलाओं व पुरुषों के लिए भिन्न-भिन्न भूमिकाएं एवं व्यवहार प्रतिमान निर्धारित किये हैं। यद्यपि, स्त्रियों व पुरुषों की भिन्न-भिन्न शरीर रचना एवं शारीरिक प्रक्रियाएं, उनके व्यवहारों को प्रभावित करती हैं, लेकिन पूर्णतः निर्धारित नहीं करती हैं। अन्य शब्दों में, लैंगिक भूमिकाएं व लक्षण, जैविक रूप से प्रदत्त नहीं हैं, अपितु 'सांस्कृतिक अनुकूलन' का परिणाम हैं। उदाहरण के लिए, अमेरिकी मानवशास्त्री 'मारग्रेट मीड' ने 'न्यूगिनी' में निवासरत तीन आदिम समाजों 'तेहाम्बुली', 'अरापेश' व 'मुण्डुगुमोर' जनजाति के पुरुषों व महिलाओं की भूमिकाओं के तुलनात्मक अध्ययन में पाया कि सम्बंधित प्रत्येक जनजाति में महिलाओं व पुरुषों की भूमिकाएं व चारित्रिक विशेषताएं, पश्चिमी समाजों द्वारा निर्धारित मानकों, जैसे पुरुषों का आवश्यक रूप से प्रभुत्वशाली, आक्रामक व तार्किक होना व महिलाओं का आवश्यक रूप से आज्ञाकारी, विनम्र एवं अति संवेदनशील होना से पूर्णतः भिन्न थी।